JVC

जनमुख

स्वतंत्रता दिवस परिशिष्ट 2025

INDEPENDENCE DAY

आजादी का अमृत – 78 साल का सफर

With Best Wishes

CLINIKIMAYA+

ADVANCED SKIN | HAIR | LASER CLINIC

डॉ. स्नेहा सिंह

एम.बी.बी.एस., एम.डी. (स्किन एवं वीडी)

के द्वारा वाराणसी का
सबसे उन्नत त्वचा क्लीनिक

त्वचा एवं बालों से जुडी समस्याएं

मुंहासे, खाज–खुजली,
अन्य त्वचा रोग, बाल झड़ना,
झाइयां, तिल एवं मस्से आदि।

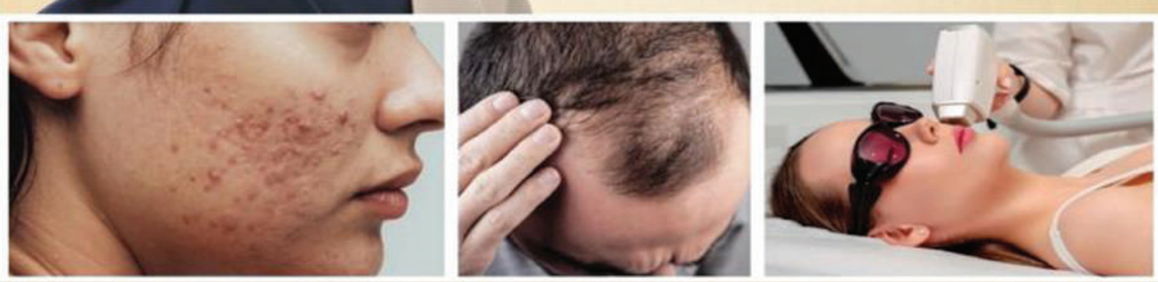

सेवाएंः अनचाहे बालों को हटाने के लिए आधुनिक लेजर थेरेपी, टैटू हटाना, स्किन मस्से हटाना, बालों के झड़ने के लिए पीआरपी थेरेपी, हाइड्राफेशियल।

–ः क्लीनिक का पता ः–

एस 1/124–बी, प्रथम तल, गिलट बाजार, न्यू कृष्णा फार्मेसी के ऊपर, वाराणसी, उ.प्र. - 221003

7390050037

सम्पादकीय

विकसित भारत के लिए संकल्प के साथ आगे बढ़ें

सरोज सिनहा
समाचार संपादक

आज हमारा देश 79वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। देखा जाए तो यह हमारे लिए खुशी एवं गौरव का क्षण है। इस दिन का खास इतिहास हमें उन अनगणित वीरों के संघर्ष, बलिदान और देशभक्ति की याद दिलाता है जिन्होंने अपने प्राणों की आहूति देकर हमें आजादी दिलाई। देखा जाए तो यह अवसर केवल झंडा फहराने और भाषण देने का नहीं बल्कि देश के प्रति गर्व और जिम्मेदारी महसूस करने का है। हमारी विकास यात्रा अद्भुत है। हमने उदारता की राह चुनी थी। हम विकसित नहीं हुए, पर पिछले इसने वर्षो में हमारी अर्थव्यवस्था अपनी विकासशीलता के लिए एक प्रतिमान बन गयी है। हमारी बढ़ती संपन्नता एक सामूहिक सफलता है। जिसे आगे बढ़ाने के साथ संकल्प के साथ चले।

भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ। आजादी से पहले भारत लगभग 200 साल तक ब्रिटिश शासन के अधीन था। इस आजादी के पीछे कई दशकों का संघर्ष आंदोलन और बलिदान रहा है। 47 की क्रांति को लेकर महात्मा गांधी के नेतृत्व में चले असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ों आंदोलन तक हर कदम ने स्वतंत्रता की राह बनाई। देखा जाए तो स्वतंत्रता दिवस आज सिर्फ त्योहार नहीं बल्कि यह आजादी की कीमत समझने और देश के प्रति अपनी कर्तव्यों को निभाने का दिन है। यूँ कहें तो 15 अगस्त का इतिहास हर भारतीय के दिल में गर्व और सम्मान की भावना भर देता है। 15 अगस्त को भारत अपना 79वाँ स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। इस बार पूरे देश में स्वतंत्रता दिवस 2025 एक खास थीम के साथ मनाया जा रहा है जो भारत की प्रगति, एकता और गर्व का प्रतीक है। 2025 की थीम है देशवासियों में जागरूकता और देशभक्ति की भावना। यानि इस साल की थीम 'न्यू इंडिया'। इस थीम का उद्देश्य 2047 के लिए आज से ही एक समृद्ध सुरक्षित और आत्म निर्भर के संकल्प को मजबूत करना है। यह सरकार के विकसित भारत विजय का प्रतीक है, जो हर नागरिक को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने पर जोर देगा। आज का भारत एक नई दिशा में बढ़ रहा है, तकनीकी, विकास, वैश्विक मंचों पर नेतृत्व और आर्थिक प्रगति की ओर। किन्तु इस सबके बीच हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि स्वतंत्रता के साथ-साथ जिम्मेदारी भी हमारी ही है 2025 का भारत यूं भी चुनौतियों से जूझ रहा है। जलवायु परिवर्तन, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता और डिजिटल सूचना की चुनौतियां भी झेलनी पड़ रही है। ऐसे में एक सच्चे स्वतंत्र नागरिक का कर्तव्य बनता है कि वह न केवल अपने अधिकारों के प्रति सजग रहे, बल्कि अपने कर्तव्यों का भी ईमानदारी से पालन करें।

जनमुख परामर्श मंडल

एस. कुमार
अध्यक्ष
सिंधी काउंसिल ऑफ इंडिया

संतोष अग्रवाल
हरे कृष्ण ज्वैलर्स
सभापति, श्री काशी अग्रवाल समाज

श्रीनारायण खेमका
अध्यक्ष : अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन

वी.के.जैन
अध्यक्ष
जैन मिलन, वाराणसी

डा. नीलम ओहरी
स्त्री रोग विशेषज्ञ

डा. एस.के.पाठक
वरिष्ठ चिकित्सक

प्रधान सम्पादक
ब्रजेश कुमार राय 'शर्मा'

समाचार सम्पादक
सरोज सिन्हा

फोन : 0542-2500324
9336929544
Email :
janmukh.vns@gmail.com

जनमुख हिन्दी दैनिक के लिए निशुल्क प्रकाशित

With Best Wishes
Fashion Fever
A CHOICE OF TODAY'S GENERATION
T-Shirt, Pant, Short Shirt, Lower, Half Pant
Kids Wear, Complete Family Shop

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं
जीवन स्टोर्स
नाइटी, नाइट सूट, शॉल, स्टॉल एवं कार्डिगन इत्यादि।
(मारवाडी अस्पताल बिल्डिंग के नीचे, गांधी आश्रम के बगल में) दशाश्वमेध रोड, वाराणसी। मो.नं.-9696763507

विकसित भारत का सपना... कितना पूरा, कितना बाकी?

आज़ादी के 78 साल... आज हमारा भारत नई ऊँचाइयों को छू रहा है–चाँद पर तिरंगा, डिजिटल क्रांति, और वैश्विक मंच पर बढ़ता कद। लेकिन सवाल ये है... क्या ये सफ़र हमें सच में 'विकसित भारत' की मंज़िल तक पहुँचा रहा है, या हम अब भी रोज़मर्रा की चुनौतियों, गरीबी, बेरोज़गारी और असमानता से जूझ रहे हैं? आइए, सुनते हैं जनता की राय–क्या भारत विकसित बनने की राह पर है, या अभी भी संघर्ष कर रहा है?'

अंशुमान राय

विकसित राष्ट्र की ओर निरंतर तेजी से बढ़ रहा है देश

आर.के. चौधरी
उद्यमी एवं समाजसेवी

79वीं स्वतंत्रता दिवस की सभी काशीवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए बलिदान देने वालों को श्रद्धाजंलि। आज इस मौके पर भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को कृतज्ञता ज्ञापित करनी है कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का जो स्वप्न देखा है हम उस ओर बढ़ रहे हैं। साथ ही उन्होंने आज विश्व के सर्वमान्य नेता के तौर पर भारत की छवि को प्रतिष्ठापित किया है। देश विकास के जिस रास्ते पर है देश के सभी नागरिकों का भी उसमें योगदान है। भारत विकास की ओर निरन्तर बढ़ रहा है। मैं अपने समाज के लोगों से भी अपील करुंगा कि राष्ट्र के विकास में राष्ट्र को आगे बढ़ाने में पूरा अपना योगदान दें और समाज में सामाजिक कार्यों में भी जिस प्रकार मारवाड़ी समाज आगे बढ़कर काम करता है, आगे भी करता रहे।

विकास के साथ संघर्ष चलता रहेगा

अशोक अग्रवाल
उद्यमी एवं समाजसेवी

ये अनलिमिट है। विकास के साथ संघर्ष भी चलता रहेगा। विकास भी होता रहेगा और हम विकसित राष्ट्र की ओर भी बढ़ते रहेंगे। जो चीज रूक गयी वह तो खत्म हो जाएगी। हमें तो संघर्ष करना ही है और विकसित भी बनना है और इसके लिए लगातार काम होते रहेंगे। हाल के वर्षों में देश तेजी से विकास के रास्ते पर चल रहा है। यही वजह है कि आज हम दुनिया की तीसरी आर्थिक शक्ति बन चुके हैं। कुछ समय बाद हम दूसरे या पहले पायदान पर भी आ जायेंगे।

शिक्षा
के लिए
लोगों में
जागरुकत
जरुरी

2047 तक विकसित राष्ट्र बनना मुश्किल

डा. दिव्यांक पाठक
बाल रोग विशेषज्ञ

हमारा देश विकसित देश बनने की ओर जा रहा है, बिल्कुल जा रहा है परन्तु वर्ष 2047 तक जो 'विकसित भारत' का लक्ष्य है वह मुझे नहीं लगता है कि अभी भारत बन पाएगा। एक ओर जो भी कार्य सही हो रहे हैं उसे विपक्ष व सत्ताधारी दल द्वारा मिलकर सर्पोट करनी चाहिए और जो गलत हो रहा है उसे मना करना चाहिए। दूसरी ओर, एक नागरिक के तौर जो हम सबकी रिस्पांसब्लिटी है उसे पूरा करना चाहिए। लेकिन हम वह सपोर्ट नहीं कर पाते। हमारे देश को जितना तेजी से विकसित होना चाहिए उतना तेजी से विकसित नहीं हो रहा हैं। लेकिन यह निश्चित है कि हमारा देश आने वाले समय में अवश्य विकसित राष्ट्र बनेगा।

बहुत से क्षेत्रों में विकास हुए हैं, 'लेकिन' हमें रोक रहा है

डा. अभिनव अग्रवाल
हड्डी रोग विशेषज्ञ

आजादी की 78 वर्षो बाद देश ने तरक्की व प्रगति तो बहुत की है। एक तरफ जहां हम लोग देखते हैं कि बड़ी-बड़ी बिल्डिंग, आलीशान महल, बड़ी-बड़ी गाड़ियां, नई टेक्नोलॉजी, आईआईटी सेक्टर में महारथ हासिल की है। दुनिया में हम लोगों का डंका बज रहा है। कई ऐसे सेक्टर है जहां हम लोगों ने काफी सफलता प्राप्त की है। और यह सफलता बहुत कम समय में प्राप्त किये हैं और बहुत सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं। वहीं दूसरी ओर ऐसा भारत है कि बेसिक सुविधाओं के लिए भी फाइट है। अभी भी संघर्ष करना पड़ता है। झोपड़ियां हैं, एक बेसिक लेवल के टॉयलट तक नहीं हैं। इन सबके लिए भारत जूझ रहा है। तो भारत प्रगतिशील राष्ट्र बना है या नहीं बना है, लेकिन हां प्रगति काफी हो रही है। काफी आगे बढ़े हैं बहुत मामले में विकास किया है। लेकिन बस! लेकिन है, जो हमें रोक रहा है। इस लेकिन को ही हटाना है जो विकसित राष्ट्र की ओर अग्रसर हो और सभी खुशहाल रहें।

करप्शन विकसित राष्ट्र की दिशा में सबसे बड़ी बाधा

डा. स्नेहा सिंह, स्किन रोग विशेषज्ञ

देखिए, भारत विकसित तो हो ही रहा है। कई मायने में तो विकसित हो चुका है। लेकिन हमें विकसित राष्ट्र बनने के लिए सबसे पहले पूरी तरह से करप्शन हटाना होगा। क्योकि करप्शन के चलते आज जिसके पास सुविधा है वह तो काफी आगे बढ़ रहे हैं परन्तु जिनके पास सुविधाएं नहीं है वे अभी भी पीछे ही रह जा रहे है। अतः मेरा सोचना है कि भारत विकसित तो हो रहा है लेकिन जब तक करप्शन पूरी तरह से नही हटेगा तब तक विकसित राष्ट्र की ऊंचाईयों तक को पहुंचने में समय लगेगा।

विकसित देश बनने की राह पर है भारत

जयमंगल सिंह
माइक्रोटेक इंस्टीट्यूट

2024 से काफी सुधार देख रहे हैं चाहे वह रोड हो, इन्फ्रास्ट्रक्चर हो, एजुकेशन हो, आई.आई.टी हो या हेल्थ सेक्टर है। काफी कुछ बदला है। हम कहना चाहेंगे कि हम अभी प्रोग्रेसिव हैं, प्रोगेस्ड नहीं हैं। हम अभी उस राह पर है।। अभी हम आने वाले 10 सालों में आपको इसका परिणाम देखने को मिलेगा। हमारी सारी सुविधाएं बेहतर हो रही हैं। हमें उम्मीद है कि आने वाले दस वर्षों में हमारा देश विकसित देश बन जाएगा।

स्वास्थ्य और शिक्षा पर अभी काम करने की जरुरत

अब्दुल मन्नान
आइसेकी

हमारा देश विकास की ओर अग्रसर हैं। लेकिन अभी कुछ कमियां हैं। रोड हर गांव तक अवश्य पहुंच गया है परन्तु स्वास्थ्य सेवाएं अभी भी हर गांव तक नहीं पहुंची है। एजुकेशन भी अभी हर गांव तक ठीक से नहीं पहुंचा है। एक आम व्यक्ति की जो जरुरत है रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य इन तीनों पर हमें अभी काम करने की आवश्यकता है तभी विकसित राष्ट्र का रुप ले पाएंगे।

विकसित राष्ट्र की ओर अग्रसर

डा. दिनेश कुमार

विकसित भारत की परिकल्पना हमारे प्रधानमंत्री जी की बहुत अच्छी है। और संघर्षरत है भारत विकसित भारत की ओर तेजी से बढ़ रहा है। देश लगातार विकास के पथ पर अग्रसर है। ऐसे में हम 2047 तक अवश्य विकसित राष्ट्र के लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

देश में काफी हुआ विकास कार्य

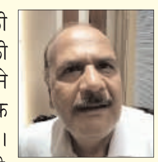

सुरेश कुमार
लैंडमार्क होटल

विकसित भारत की परिकल्पना में भारत काफी विकास किया है। सरकार ने 2014 से 2025 तक बहुत अच्छा कार्य किया है। मैं जहां रहता हूँ, वहां भी और अन्य स्थानों पर भी मैंने देखा है बहुत सुधार हुआ है। विकास बहुत हो रहा है। गलियों व सड़कों में सुधार बहुत अच्छा किया है।

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

एस.एल.ठाकुर
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
राष्ट्रीय समाजवादी जनक्रांति पार्टी

स्वतंत्रता दिवस पर अपील करता हूँ कि आयें हम सभी मिलकर आजादी के औचित्य को चरितार्थ करते हुए जाति, धर्म, भाषा से ऊपर उठकर समाज का नवनिर्माण हेतु एक कदम आगे बढ़ाते हैं।

आत्महत्याः लाचारी नहीं, ये एक गंभीर बीमारी है

आज के आधुनिक युग में जीवन में मनुष्य की तमाम अभिलाषाएं होती हैं। यह हमेशा अपने कल की ओर बेहतर करना चाहता है। इसी चाहत से तनाव का भी जन्म होता है। तनाव का कुप्रबन्धन आपको अपनी मूल भावना से दूर-हताशा, निराशा, अकेलापन और कभी-कभी आत्महत्या की तरफ ले जाता है। यह एक क्रमिक बदलाव है, जो झटके से नहीं होता है। इस बदलाव के लक्षणों को समझकर आत्मघात को रोका जा सकता है।

सुसाइड को कैसे समझें?

आत्महत्या का इतिहास बहुत प्राचीन है। स्वयं को खत्म कर देने की वृति सामान्य मानवीय वृति नहीं मानी जाती है। होमो सेपिएस के इवोलुशन का इतिहास बताता है कि जीने की प्रबल इच्छा ने ही इन्हें जीवों में सर्वोत्तम बनाया। ऐसे में किसी के अन्दर जीने की इच्छा खत्म होना एक असामान्य बात है। खुद को खत्म करने की प्रवृत्ति न्यूरोरसायनों में लम्बी अवधि की गड़बड़ी को दर्शाती है। ऐसा ज्यादातर लम्बे समय की मानसिक बीमारियों के कारण होता है। आजकल अवसाद नामक बीमारी की वरम परिणति आत्महत्या के रूप में होती है। वर्षो से यह मान्यता रही कि आत्महत्या एक लाचारी है- और, आत्महत्या का फैसला अचानक से लिया फैसला है- जबकि, ऐसा नहीं है। निरंतर न्यूरो-रसायनों की गड़बड़ी जब हमारे नेचुरल ह्यूमन इंस्टिक्ट-जीने की इच्छा को खत्म कर देती है तो मनुष्य आत्मघाती कदम उठाता है। इसके संकेत व्यक्ति के व्यवहार और क्रियाकलापों से मिलने लगते है। आपने देखा होगा कि सुसाइड की पूरी प्लानिंग की जाती है- तो यह अचानक से लिया फैसला कैसे हो सकता है मनोविज्ञान? में आत्महत्या के भी कई प्रकार बताये गये है। जैसे-कॉपी कैट, ईगोस्टिक, एड्यूस्टिक और कई बार कारण विशेष। किन्तु, आत्महत्या के मूल में मानसिक विकार ही होता है। यह मानसिक विकार व्यक्तिगत/पारिवारिक/करियर/सामाजिक तनाव के कारण/कर्ज/अपमान/फेलियर/निराशा के कारण/असाध्य बीमारियों के कारण/ ट्रामा/चोट/आघात के कारण हो सकता है।

सुसाइड एक मेडिकल इमरजेंसी है, हस्तक्षेप जरूरी

आत्महत्या को अब मेडिकल आपात की श्रेणी में डाल दिया गया है। जागरूक दोस्त/परिवार/ टीचर/पड़ोसी/ सहकर्मी अगर व्यक्ति के व्यवहार परिवर्तन को समझकर उचित चिकित्सा सलाह दिलवाएँ तो आत्महत्या की घटनाएं कम होने लगेंगी। यह कितनी बड़ी समस्या बन चुकी है, इसे आप उपरोक्त आंकड़ों से समझ सकते हैं। इसी संदर्भ में हर वर्ष 10 सितम्बर को- वर्ल्ड सुसाइड प्रिवेंशन डे- मनाया जाता है। सुसाइड प्रिवेंशन डे की शुरूआत सन् 2003 में IASP और WHO के संयुक्त प्रयासों से हुई।

उपाय क्या है?

1 संतुलित जीवनशैली: अच्छा आहार, नियमित व्यायाम, भरपूर नींद, अपनों से नियमित सकारात्मक बातचीत, मनोरंजित होते रहना इत्यादि।

2 तनाव आपका शत्रु नहीं है: एक स्तर का तनाव हमें जिम्मेदार और सक्रिय बनाता है। आज तनाव प्रबंधन ही सबसे महत्वपूर्ण है। अपने कामों को प्राथमिकता के अनुसार बॉट लीजिए, टाइम टेबल फॉलो करिए, परिस्थितियों को नियंत्रित करने का प्रयास न करें सहयोग लेने/ करने में हिचकें नहीं।

3 मस्तिष्क थकता है: बीमार भी होता हैः शरीर की तरह दिमाग भी अत्यधिक कार्य व पोषण के अभाव के कारण बीमार पड़ सकता है। यह एकदम स्वाभाविक है। बेझिझक मनोरोग विशेषज्ञ की सलाह लें- स्वास्थ्य लाभ लें।

4 नशाखोरी स्वयं एक बीमारी है: मादक द्रव्यों का सेवन आपको मानसिक अपंग और असाध्य शारीरिक व्याधियों की तरफ ले जाता है। आपकी थकान/तनाव को दूर करने का उपाय नशाखोरी नहीं है।

मानसिक विकार के सामान्य लक्षण

सर दर्द,हाथ- पैर में दर्द/जलन/ झनझनाहट, दिमाग में विचारों का चलते रहना, घबराहट/बेचैनी, काम में मन न लगना, आत्महत्या का विचार, आत्मविश्वास में कमी, बेवजह शक करना/वहम की समस्या, लम्बे समय से पावन संबंधित दिक्कत का होना, अपने आप में बुद्धदाना/बेवजह हँसना/कानों में आवाजें आना।

डॉ. प्रदीप चौरसिया
मनोचिकित्सक

व्यवहार परिवर्तन है संकेत

निराशा/खालीपन/जीने का कारण न होने की बात करना।
फंसा हुआ महसूस करना/कोई समाधान न दिखना।
मृत्यु के प्रति चिंता।
मरने की इच्छा या खुद को मारने की इच्छा के बारे में बात करना।
असहनीय दर्द महसूस होना।
तर्कसंगत विचारों की कमी।
मनोस्थिति में बार-बार बदलाव होना
खानपान/सोने की आदतों में बदलाव।
आत्महत्या करने की विशेष योजना बनाना/रस्सा खरीदना/पेस्टिसाइड खरीदना/ज्वलनशील सामग्री इकट्ठा करना या इनके बारे में बात करना।

कारक/ट्रिगर

सभी लिंग/आयु/जाति/स्थान के लोग सुभेद्य हैं।
किशोरवय/अधेड़/वृद्धों में संभावना ज्यादा होती है
वर्तमान आंकड़े बताते हैं कि महिला/पुरूष लगभग समान दर से आत्मघाती कदम उठा रहे हैं।
15-24 साल के आयुवर्ग में बढ़ोतरी देखी जा रही है
लंबी बीमारी, गंभीर मनोरोग, ट्रौमा/चोट, महामारी, युद्ध, बेरोजगारी इत्यादि भी जोखिम कारक हैं।
खतरनाक वस्तुओं/दवाओं/स्थानों तक आसान पहुँच का होना।

इंटरनेट यूजेज पर लिमिटेशन दी जानी चाहिए। जिससे लोगों का स्वास्थ्य व दिनचर्या सही रहे। इससे वातावरण पर भी खासा असर पड़ेगा।

श्री अरबिंदो घोष

क्रांतिकारी और योगी थे, स्वतंत्रता संग्राम में दिया था अहम योगदान

महान क्रांतिकारी और योगी श्री अरबिंदो का 15 अगस्त को जन्म हुआ था। वह साल 1910 के के प्रभावशाली नेताओं में से एक थे। इसके अलावा श्री अरबिंदो एक भारतीय दार्शनिक, योगी, कवि और भारतीय राष्ट्रवादी थे।

आज ही के दिन यानी की 15 अगस्त को महान क्रांतिकारी और योगी श्री अरबिंदो का जन्म हुआ था। उन्होंने स्वाधीनता संग्राम के लिए जनमानस को तैयार करने में अहम भूमिका निभाई थी। वहीं इस दौरान उनको जेल यात्रा भी करनी पड़ी थी। वह साल 1910 के के प्रभावशाली नेताओं में से एक थे। इसके अलावा श्री अरबिंदो एक भारतीय दार्शनिक, योगी, कवि और भारतीय राष्ट्रवादी थे। तो आइए जानते हैं उनकी बर्थ एनिवर्सरी के मौके पर महान क्रांतिकारी और योगी श्री अरबिंदो के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और परिवार

कलकत्ता में 15 अगस्त 1872 को श्री अरबिंदो का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम श्री कृष्णधन घोष था। जोकि एक समृद्ध डॉक्टर थे। जब वह सात वर्ष के थे, तो उनको अपने भाइयों के साथ इंग्लैंड भेजा गया था। क्योंकि उनके पिता की इच्छा थी कि वह प्रशासनिक सेवा की प्रतियोगिता में भाग लें और भारत वापस आने के बाद उच्च पद पर कार्य करें। श्री अरबिंदो को गुजराती, मराठी, बंगला और संस्कृत आदि भाषाओं का ज्ञान था। हालांकि पिता की इच्छा होने की वजह से उन्होंने परीक्षा दी, लेकिन उनकी इसमें रुचि नहीं थी। ऐसे में श्री अरबिंदो जानबूझकर घुड़सवारी की परीक्षा देने नहीं गये। दरअसल, उनका इस परीक्षा में सम्मिलित न होने का कारण अंग्रेजों की नौकरी के प्रति उनकी घृणा भावना थी।

स्वाधीनता संग्राम

श्री अरबिंदो ने 'वंदे मातरम' नामक अखबार का प्रकाशन किया। इस समाचार पत्र के जरिए उन्होंने तत्कालीन जनमानस को स्वाधीनता संग्राम के लिए तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभाई थी। इस समाचार पत्रों में उनके संपादकीय लेखों ने उन्हें अखिल भारतीय ख्याति दिला दी। उस दौरान अंग्रेज कहते थे कि वंदे मातरम की एक-एक पंक्ति में राजद्रोह भरा है। जिसको इतनी चालाकी से छिपाया गया है कि उस पर मुकदमा नहीं चल सकता। फिर साल 1908 से लेकर 1909 तक अंग्रेज सरकार ने श्री अरबिंदो को अलीपुर जेल में रखा था। इस दौरान जेल में रहते हुए उन्होंने ध्यान, धारणा और योगाभ्यास को समय दिया। जेल में रहते हुए उन्होंने भारतीय दर्शन और वेदों का अध्ययन भी किया जिसके बाद वे योगी बन गए। वहीं जेल से बाहर आने के बाद वह कोलकाता छोड़कर पुडुचेरी रहने के लिए चले गए। वहीं योगी बनने के बाद उन्होंने पुडुचेरी में आश्रम स्थापित कर लिया था। उन्होंने 40 सालों तक पुडुचेरी में रहकर पृथ्वी पर दिव्य जीवन के लिये प्रसार किया था।

लोकतंत्र के सबसे बड़े मार्गदर्शक थे जवाहर लाल नेहरू

देश की आजादी में प्रयागराज की काफी अहम भूमिका रही। क्योंकि आजादी से पहले और बाद में इस शहर ने कई महापुरुषों और शीर्ष राजनेताओं को जन्म दिया है। इन्हीं में से एक आजाद भारत के पहले प्रधानमंत्री और भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन के नेता पंडित जवाहर लाल नेहरू थे। नेहरू ने देश की आजादी में अहम भूमिका निभाई थी। 27 मई को देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का निधन हो गया था। तो आइए स्वतंत्रता दिवस के इस पावन पर्व पर देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के जीवन से जुड़े अहम तथ्यों के बारे में जानते हैं।

जन्म और शिक्षा

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 14 नवंबर 1889 को पंडित नेहरू का जन्म हुआ था। इनका बचपन भी प्रयागराज में बीता और यहां से उन्होंने शुरुआती शिक्षा प्राप्त की। फिर उन्होंने इंग्लैंड में हैरो स्कूल और कॉलेज की शिक्षा लंदन के ट्रिनिटी कॉलेज से पूरी की। इसके बाद कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से लॉ की डिग्री प्राप्त की। साल 1912 में वह भारत वापस आ गए और वकालत शुरू की।

महात्मा गांधी से हुए प्रभावित

बता दें कि साल 1917 में पंडित नेहरू होम रूल लीग में शामिल हुए और साल 1919 में वह महात्मा गांधी के संपर्क में आए। उस दौरान महात्मा गांधी ने रॉलेट एक्ट के खिलाफ एक अभियान शुरू किया था। ऐसे में नेहरू भी गांधी जी के सक्रिय लेकिन शांतिपूर्ण सविनय अवज्ञा आंदोलन की ओर आकर्षित हुए। फिर पंडित नेहरू ने गांधी जी के उपदेशों की तरह अपने परिवार को भी उसी तरह से ढाल लिया था।

दरअसल, जवाहर लाल नेहरू और उनके पिता मोतीलाल नेहरू ने अपनी महंगी संपत्ति और वेस्टर्न ड्रेस को त्याग दिया था। वह खाली का कुर्ता और गांधी टोपी पहनने लगे। वहीं 1920-1922 में पंडित नेहरू ने असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया और पहली बार गिरफ्तार हुए। लेकिन कुछ महीनों बाद वह रिहा हो गए। फिर साल 1924 में वह इलाहाबाद नगर निगम के अध्यक्ष बने और इस शहर के मुख्य कार्यकारी के रूप में उन्होंने दो सालों तक सेवा की।

वहीं 1927 में पंडित नेहरू ने मास्को में अक्तूबर समाजवादी क्रांति की 10वीं वर्षगांठ समारोह में हिस्सा लिया। फिर साल 1928 में साइमन कमीशन के दौरान लखनऊ में पंडित नेहरू पर लाठीचार्ज किया गया था। वहीं 29 अगस्त 1928 को जवाहर लाल नेहरू ने सर्वदलीय कांग्रेस में भाग लिया और भारतीय संवैधानिक सुधार पर नेहरू रिपोर्ट पर हस्ताक्षर किए। साल 1928 में नेहरू ने इंडिया इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना की और इसके महासचिव बनें। इसके बाद साल 1929 में वह

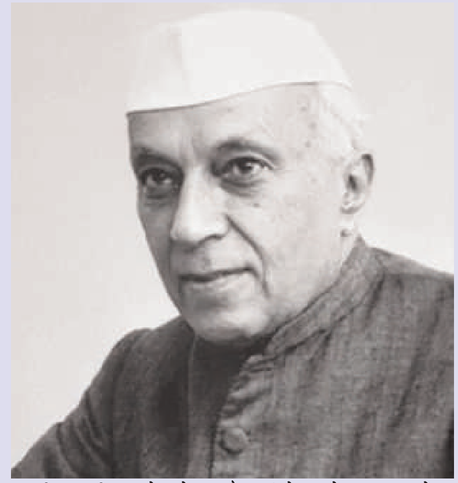

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष बने।

देश के पहले प्रधानमंत्री- देश की स्वतंत्रता में अहम योगदान देने वाले पंडित जवाहर लाल नेहरू 15 अगस्त 1947 से लेकर 27 मई 1964 तक देश के प्रधानमंत्री रहे थे। बता दें कि इससे पहले वह 02 सितंबर 1946 से लेकर 15 अगस्त 1947 तक वह देश की अंतरिम सरकार के मुखिया थे।

मृत्यु- वहीं 27 मई 1964 की दोपहर में 74 वर्ष की आयु में दिल का दौरा पड़ने से पंडित जवाहर लाल नेहरू का निधन हो गया।

> **आजाद भारत के पहले प्रधानमंत्री और भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन के नेता पंडित जवाहर लाल नेहरू का 27 मई को निधन हो गया था। पंडित नेहरू ने देश की आजादी में अहम योगदान दिया था। न सिर्फ कांग्रेस पार्टी के नेता बल्कि दूसरी पार्टी के नेता भी उनका सम्मान करते थे।**

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं।

15 अगस्त 1947: देश की आज़ादी से जुड़ी खास बातें

15 अगस्त 1947 को हमारा देश ब्रिटिश शासन की 200 वर्षों की गुलामी से आजाद हुआ था। 15 अगस्त आज़ादी का दिन ही नहीं, बल्कि यह लाखों स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान, साहस और संघर्ष की याद दिलाने वाला दिन है। इस दिन की कुछ खास बातें आईए आपको बताते है।

1. आज़ादी का ऐलान

भारत को 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश शासन से आज़ादी मिली।

ब्रिटिश संसद के Indian Independence Act 1947 के तहत भारत और पाकिस्तान, दो स्वतंत्र देश बने।

2. आज़ादी का समय आधी रात

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 14 अगस्त की रात 11:59 बजे से 15 अगस्त की पहली सुबह संसद में 'Tryst with Destiny' भाषण दिया।

भारत की आज़ादी आधी रात को इसलिए घोषित हुई ताकि दिनाक और समय दोनों नए युग की शुरुआत का प्रतीक बनें।

3. पहला स्वतंत्रता दिवस समारोह

दिल्ली के लाल किले पर पहली बार तिरंगा फहराया गया।

पंडित नेहरू ने प्रधानमंत्री के रूप में पहला स्वतंत्रता दिवस भाषण दिया।

4. विभाजन और दर्द

आज़ादी के साथ ही भारत का विभाजन हुआ और पाकिस्तान बना।

लाखों लोग अपने घर छोड़ने पर मजबूर हुए और हिंसा में हजारों लोगों की जान गई।

5. तिरंगे का महत्व

भारत का तिरंगा 22 जुलाई 1947 को अपनाया गया।

केसरिया रंग – साहस और बलिदान

सफेद रंग – शांति और सत्य

हरा रंग – विश्वास और समृद्धि

बीच में अशोक चक्र – 24 तीलियों वाला धर्म चक्र, प्रगति और निरंतरता का प्रतीक।

6. पहले गवर्नर-जनरल और प्रधानमंत्री

लॉर्ड माउंटबेटन – आज़ाद भारत के पहले गवर्नर-जनरल।

सी. राजगोपालाचारी – पहले भारतीय गवर्नर-जनरल (1948)।

पंडित जवाहरलाल नेहरू – पहले प्रधानमंत्री।

7. राष्ट्रगान

रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित 'जन गण मन' को 1950 में भारत का राष्ट्रगान घोषित किया गया।

1947 में स्वतंत्रता दिवस समारोह में इसका आंशिक रूप से गायन हुआ।

8. आज़ादी के पीछे लंबा संघर्ष

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन और अनेक क्रांतिकारियों के बलिदान के बाद यह आजादी मिली।

9. राष्ट्रीय अवकाश और परंपरा

15 अगस्त को पूरे भारत में राष्ट्रीय अवकाश होता है।

प्रधानमंत्री लाल किले से झंडा फहराकर देश को संबोधित करते हैं।

स्कूल, कॉलेज और दफ्तरों में झंडारोहण और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।

10. भारत का संविधान

आजादी के समय भारत का संविधान लागू नहीं हुआ था।

तब तक Government of India Act 1935 से शासन चला 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू हुआ और भारत गणराज्य बना।

15 अगस्त 1947 सिर्फ आज़ादी का दिन नहीं, बल्कि यह लाखों स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान, साहस और संघर्ष की याद दिलाने वाला दिन है। यह दिन हमें एकजुट होकर देश की सेवा और सम्मान के लिए प्रेरित करता है।

लोकमान्य तिलक ने उठाई थी पूर्ण स्वराज की मांग, क्रांति की ज्वाला से दहल उठा था ब्रिटिश राज

भारत के प्रमुख नेता, समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी और लोकप्रिय नेता बाल गंगाधर तिलक का 01 अगस्त को निधन हो गया था। उनके नाम के आगे 'लोकमान्य' लगाया जाता है, जोकि उन्होंने अर्जित की थी। उन्होंने ब्रिटिश राज के दौरान सबसे पहले पूर्ण स्वराज की मांग उठाई थी। 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा बाल गंगाधर तिलक ने दिया था। उनका पूरा जीवन ही आदर्श था। तो आइए जानते हैं आजादी की इस वर्षगांठ के मौके पर बाल गंगाधर तिलक के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और परिवार

महाराष्ट्र के रत्नागिरी में 13 जुलाई 1856 को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर रामचंद्र तिलक था। वह संस्कृत के विद्वान और प्रख्यात शिक्षक थे। उनकी मां का नाम पार्वती बाई गंगाधर था। साल 1871 में तिलक का तपिबाई नामक कन्या से उनका विवाह हुआ था। शादी के बाद तपिबाई का नाम सत्यभामा हो गया।

महाराष्ट्र के रत्नागिरी में 13 जुलाई 1856 को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर रामचंद्र तिलक था। वह संस्कृत के विद्वान और प्रख्यात शिक्षक थे। उनकी मां का नाम पार्वती बाई गंगाधर था।

अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के आलोचक थे तिलक

पढ़ाई पूरी करने के बाद बाल गंगाधर तिलक ने पुणे के एक निजी स्कूल में गणित और अंग्रेजी के शिक्षक बनकर पढ़ाने लगे। लेकिन अन्य शिक्षकों के मतभेद के बाद साल 1880 में तिलक ने पढ़ाना छोड़ दिया था। दरअसल, वह अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के आलोचक थे। वह स्कूलों में ब्रिटिश छात्रों की तुलना में भारतीय छात्रों के साथ हो रहे दोगले व्यवहार का विरोध करते थे। उन्होंने समाज में फैली छुआछूत के खिलाफ भी आवाज उठाई थी।

समाज सेवा

बाल गंगाधर तिलक ने बंबई में अकाल और पुणे में प्लेग महामारी के दौरान कई सामाजिक कार्य किए। साल 1893 में उन्होंने महाराष्ट्र में सार्वजनिक रूप से गणेशोत्सव मनाने की शुरूआत की। इस दौरान गणेश चतुर्थी के दिन लोग घर में भगवान गणेश की मूर्ति को 10 दिन रखकर उत्सव मनाते थे। वहीं तिलक ने विचार किया कि क्यों न घरों से निकालकर सार्वजनिक स्थल पर गणेशोत्सव मनाया जाए, जिससे कि इस पर्व में हर जाति के लोग शिरकत कर सकें।

तिलक के प्रयास

बाद में तिलक ने दक्खन शिक्षा सोसायटी की स्थापना की थी। इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य भारत में शिक्षा के स्तर को सुधारना था। वहीं उन्होंने मराठी भाषा में मराठा दर्पण और केसरी नाम से दो अखबार शुरू किए थे। जोकि उस दौर में काफी ज्यादा लोकप्रिय हुए थे। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा बनकर अंग्रेजी हुकूमत का विरोध किया और भारतीयों के लिए पूर्ण स्वराज की मांग की। केसरी अखबार में छपने वाले लेखों के कारण तिलक ने कई बार जेल यात्रा भी की। वहीं 01 अगस्त 1920 में बाल गंगाधर तिलक का निधन हो गया।

उधम सिंह ने लंदन में घुसकर लिया था जलियांवाला बाग का बदला, जानें कैसे मारी डायर को गोली

उधम सिंह ने जलियांवाला बाग में हुए नरसंहार का बदला लेने के लिए अपनी जिंदगी को दांव पर लगा दिया था। भारत के इस वीर सपूत ने देश की आजादी के लिए अंग्रेजों के खिलाफ क्रांति में अहम भूमिका निभाई थी। यह जलियांवाला बाग का बदला लेने के लिए भारत से ब्रिटेन गए थे। उधम सिंह देश की आजादी की लड़ाई में भगत सिंह के योगदान से काफी ज्यादा प्रेरित थे। आज जब देश आजादी की 79वीं वर्षगांठ मना रहा है तो हमें भारत मां के ऐसे वीर सबूतों को अवश्य याद करना चाहिए, नमन करना चाहिए।

पंजाब के संगरूर में 26 दिसंबर 1899 उधम सिंह का जन्म हुआ था। इनके बचपन का नाम शेर सिंह था। उधम सिंह ने छोटी उम्र में ही अपने माता-पिता और भाई को खो दिया था। जिसके बाद इनकी परवरिश अमृतसर के खालसा अनाथालय में हुई। वहीं 1919 में हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड ने उधम सिंह को अंदर तक झझकोर दिया था। 13 अप्रैल को ब्रिगेडियर जनरल डायर के आदेश पर निहत्थे लोगों पर चली गोलियों ने उधम सिंह के दिल में बदले की भावना पैदा कर दी थी।

उधम सिंह ने भगत सिंह से प्रेरित होकर क्रांतिकारी आंदोलन में कदम रखा था। साल 1927 में वह हथियार और देशद्रोही साहित्य के आरोप में जेल गए। जहां पर भगत सिंह से उनकी मुलाकात हुई और उधम सिंह के इरादे अधिक मजबूत हुए। जेल से रिहा होने के बाद उधम सिंह ने सीधे लंदन की राह पकड़ी और वहां पर जलियांवाला बाग के लिए जिम्मेदार माइकल ओ डायर को सबक सिखाने की ठानी।

वहीं 13 मार्च 1940 को लंदन के कैक्सटोन हॉल में उधम सिंह ने एक किताब में छिपाई रिवॉल्वर से जनरल ओ डायर को दो गोलियां मारकर मौत के घाट उतार दिया। उधम सिंह द्वारा लिया गया यह बदला जलियांवाला बाग हत्याकांड के घाव का प्रतीक था।

हिला दी थी अंग्रेजों की नींव

इसके बाद उधम सिंह पर मुकदमा चला, तो उन्होंने गर्व से कहा कि ऐसा उन्होंने अपने देश के लिए किया। वहीं 31 जुलाई 1940 को लंदन की पेंटनविले जेल में उधम सिंह को फांसी दी गई।

सौंदर्य और साहस की मिसाल थीं रानी लक्ष्मीबाई

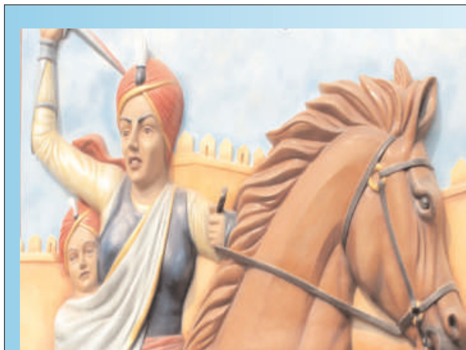

आजादी की पहली लड़ाई 1857 में लड़ी गयी थी। जिसमें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का भी अहम योगदान माना जाता है। 18 जून को अपने जीवन की आखिरी लड़ाई में रानी लक्ष्मीबाई ने वीरता की ऐसी अनोखी कहानी लिखी, जो सदियों तक याद किया जाता रहेगा। उनकी वीर गाथा इतिहास के पन्नों में दर्ज है।

झांसी की रानी की वीरता को हमेशा नमन किया जाता है और अंग्रेजों के खिलाफ उनकी शौर्य गाथा को भी याद किया जाता है। झांसी की रानी ने अंग्रेजों को धूल चटाने का काम किया था। क्योंकि अंग्रेजी हुकूमत ने झांसी को अपने अधिकार में लेने का प्रयास किया था। वहीं झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र गोद लिया था, लेकिन अंग्रेजी हुकूमत ने उसको झांसी का उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया था। तो आइए स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जानते हैं काशी की बेटी रानी लक्ष्मी बाई के बारे में। बनारस में 19 नवंबर 1828 में लक्ष्मीबाई का जन्म हुआ था। उनके बचपन का नाम मणिकर्णिका था। प्यार से लोग उनको मनु कहा जाता था। उनके पिता का नाम मोरोपंत तांबे और मां भागीरथी सप्रे था। जब मनु 4 साल की थीं, तो उनकी मां की मृत्यु हो गई और उनके पिता बिठूर जिले के पेशवा बाजी राव द्वितीय के लिए काम करते थे। उन्होंने लक्ष्मीबाई का पालन-पोषण किया। इस दौरान मनु ने तीरंदाजी, आत्मरक्षा, घुड़सवारी और निशानेबाजी की ट्रेनिंग ली।

महज 14 साल की उम्र में साल 1842 में मनु की शादी झांसी के राजा गंगाधर राव नेवलकर से हुई। शादी के बाद मनु का नाम लक्ष्मीबाई पड़ा। उस दौरान में शादी के बाद लड़कियों का नाम बदला जाता था। विवाह के बाद लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया, लेकिन उसकी मृत्यु सिर्फ 4 महीने में हो गई। वहीं बाद में उनके पति और झांसी के राजा गंगाधर राव नेवलकर का भी निधन हो गया। पति और बेटे को खोने के बाद लक्ष्मीबाई ने खुद अपनी प्रजा और साम्राज्य की रक्षा करने की ठान ली।

झांसी पर कब्जा करने की साजिश

उस दौरान ब्रिटिश इंडिया कंपनी के वायसराय डलहौजी ने झांसी पर कब्जे का यह समय बेहतर समझा। क्योंकि झांसी की रक्षा के लिए कोई नहीं था। वायसराय ने लक्ष्मीबाई पर दबाव बनाना शुरू किया कि वह झांसी को अंग्रेजी हुकूमत के हवाले कर दिया। तब रानी ने अपने रिश्तेदार के एक बच्चे को अपना दत्तक पुत्र बनाया, जिनका नाम दामोदर था।

अंग्रेजों और झांसी के बीच युद्ध

अंग्रेजी हुकूमत ने दामोदर को झांसी का उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया था। ब्रिटिश सरकार ने झांसी का किला उनके हवाले करने को कहा। अंग्रेजों में झांसी के साम्राज्य पर कब्जा करने का प्रयास किया, लेकिन लक्ष्मीबाई ने 14000 बागियों की एक बड़ी फौज तैयार की। फिर 23 मार्च 1858 को ब्रिटिश फौज ने झांसी पर आक्रमण कर दिया। वहीं 30 मार्च को बमबारी करके अंग्रेजों ने किले की दीवार में सेंध लगाने में सफल हुए। लक्ष्मीबाई 17 जून 1858 को आखिरी जंग के लिए निकली। फिर 18 जून 1858 को लक्ष्मीबाई को एक सैनिक ने गोली मार दी। फिर एक सैनिक ने तलवार से वार किया, जिसमें रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु हो गई।

आजादी के महानायक मंगल पांडे के विद्रोह से शुरू हुई थी स्वाधीनता की अलख

हमारा देश 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ था। लेकिन देश की आजादी के लिए वर्षों तक लड़ाई लड़ी गई थी। बता दें कि सबसे पहले साल 1857 में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बिगुल फूंका गया था। इस चिंगारी को भड़काने का काम मंगल पांडे ने किया था। साल 1857 में मंगल पांडे ने भारत के पहले स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। मंगल पांडे भारत के ऐसे वीर सपूत थे, जिनके बदौलत आजादी की लड़ाई ने रफ्तार पकड़ी थी। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आइए जानते हैं मंगल पांडे के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में 19 जुलाई 1827 को मंगल पांडे का जन्म हुआ था। वह ब्राह्मण परिवार से ताल्लुक रखते थे। इनके पिता का नाम दिवाकर पांडे था। वहीं महज 22 साल की उम्र में मंगल पांडे का ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में चयन हो गया। वह बंगाल के नेटिव इंफेंट्री की 34 बटालियन में शामिल हुए थे। इस बटालियन में ब्राह्मणों की भर्ती अधिक होती थी।

क्यों मशहूर हुए मंगल पांडे

साल 85 के भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में स्वतंत्रता सेनानी मंगल पांडेय ने अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने अपनी ही बटालियन के खिलाफ बगावत कर दी थी। दरअसल, ब्रिटिश शासन ने अपनी बटालियन को एंफील्ड़ राइफल दी थी। इसका निशाना अचूक था। लेकिन इस बंदूक में गोली भरने की प्रक्रिया काफी पुरानी थी। राइफल में गोली भरने के लिए कारतूस को दांतों से खोलना होता था। लेकिन मंगल पांडे ने ऐसा करने से मना कर दिया, क्योंकि ऐसी बात फैल चुकी थी कि कारतूस में सुअर और गाय के मांस का उपयोग किया जा रहा है।

अंग्रेजी हुकूमत को मंगल पांडे का विरोध पसंद नहीं आया और उनको गिरफ्तार कर लिया गया। इसी बगावत ने मंगल पांडे को मशहूर कर दिया और देश की आजादी की ज्वाला में घी डालने का काम किया। इसी कारण से मंगल पांडे को स्वतंत्रता सेनानी कहा गया। हालांकि 1857 का विद्रोह सिर्फ बंदूक की एक गोली के कारण शुरू हुआ था, लेकिन इसका नतीजा देश को आजादी मिलने तक जारी रहेगा, यह किसी ने भी नहीं सोचा था। बैरकपुर में ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला करने और उनके खिलाफ विद्रोह करने के कारण 08 अप्रैल 1857 को मंगल पांडे को फांसी दी गई। मंगल पांडे को फांसी तय डेट से 10 दिन पहले दी गई, क्योंकि ब्रिटिश हुकूमत को यह डर था कि मंगल पांडे की फांसी से हालात अधिक बिगड़ सकते हैं।

PROUD BNI MEMBER
Happy Independence Day
9795946525
Anand Furnishers
◆FURNITURE Showroom ◆Anand Trading Company ◆Playwood Wholesaler & Retailer
9305063702 9415868111 9453224029
D.59/43,MAHMOORGANJ VARANASI-221010 E-mail: anand.Furnishers84@gmail.com

बॉलीवुड के वो देशभक्ति गीत जो हर भारतीय के दिल में जगाते हैं जोश

15 अगस्त वो तारीख जब हर भारतीय के दिल में देशप्रेम का जज़्बा अपने चरम पर होता है। साल 2025 में भारत अपना 79वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। ऐसे मौके पर बॉलीवुड के वो गीत सुनना, जो दिल में देशप्रेम का उबाल भर दें, एक अलग ही अनुभव देता है। बॉलीवुड ने समय-समय पर ऐसे अनगिनत गीत दिए हैं जो आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं जितने रिलीज़ के वक्त थे। आइए जानते हैं ऐसे ही कुछ चुनिंदा देशभक्ति गीतों के बारे में।

1. मेरे देश की धरती – फिल्म 'उपकार' (1967)
गायकः महेंद्र कपूर, संगीतः कल्याणजी–आनंदजी
विशेषताः इस गीत ने प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के नारे 'जय जवान, जय किसान' को और भी लोकप्रिय बना दिया।
गाने में भारत की मिट्टी, किसानों की मेहनत और देश की खूबसूरती का बखान है। रिलीज़ के दशकों बाद भी यह गाना हर स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर बजता है।

2. संदेसे आते हैं – फिल्म 'बॉर्डर' (1997)
गायकः सोनू निगम, रूप कुमार राठौड़, संगीतः अनु मलिक
विशेषताः 1971 के भारत-पाक युद्ध पर बनी इस फिल्म का यह गीत फौजियों की भावनाओं को बखूबी दर्शाता है।
इसमें उन सैनिकों की तड़प दिखाई देती है जो अपने परिवार से दूर देश की रक्षा कर रहे होते हैं। इसकी धुन और बोल सुनकर हर भारतीय भावुक हो जाता है।

3. कर चले हम फिदा – फिल्म 'हकीकत' (1964)
गायकः मोहम्मद रफ़ी, संगीतः मदन मोहन
विशेषताः 1962 के भारत-चीन युद्ध के बाद रिलीज़ हुए इस गीत ने देश के शहीद जवानों को सच्ची श्रद्धांजलि दी। मोहम्मद रफ़ी की जादुई आवाज़ और मदन मोहन का संगीत इस गाने को अमर बना देता है। यह गीत आज भी परेड और शहीद दिवस पर गूंजता है।

4. मेरा रंग दे बसंती चोला – फिल्म 'द लीजेंड ऑफ भगत सिंह' (2002)
गायकः सोनू निगम, मोहम्मद वारिस, संगीतः ए. आर. रहमान
विशेषताः भगत सिंह की वीरता और बलिदान की भावना को दर्शाता यह गीत युवाओं में जोश भर देता है। जब ये गाना बजता है, तो मानो भगत सिंह का नारा 'इंकलाब जिंदाबाद' कानों में गूंज उठता है।

5. ए वतन – फिल्म 'राज़ी' (2018)
गायकः अरिजीत सिंह संगीतः शंकर–एहसान–लॉय
विशेषताः आधुनिक दौर का यह गीत एकता, देशभक्ति और त्याग का संदेश देता है। फिल्म में आलिया भट्ट के किरदार के ज़रिए यह गाना हमें याद दिलाता है कि देश की सेवा सिर्फ युद्ध में नहीं, बल्कि हर क्षेत्र में हो सकती है।

6. तेरी मिट्टी – फिल्म 'केसरी' (2019)
गायकः बी प्राक, संगीतः अरको
विशेषताः सारागढ़ी की लड़ाई पर बनी इस फिल्म का यह गीत वीरता, बलिदान और मातृभूमि के प्रति प्रेम को गहराई से महसूस कराता है। 'तेरी मिट्टी में मिल जावां' जैसी पंक्तियाँ हर भारतीय के दिल को छू जाती हैं।

7. ऐ मेरे वतन के लोगों (1963)
गायकः लता मंगेशकर, संगीतः सी. रामचंद्र
विशेषताः 1962 के युद्ध के बाद शहीद सैनिकों को समर्पित यह गीत पंडित नेहरू की आंखों में आँसू ला चुका है। लता जी की भावपूर्ण आवाज़ इस गाने को अमर कर देती है। देशभक्ति गीत सिर्फ मनोरंजन नहीं होते, बल्कि यह हमें हमारी जड़ों से जोड़ते हैं।

रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भगत सिंह तक, बड़े पर्दे पर दिखी आजादी के इन नायकों की कहानी

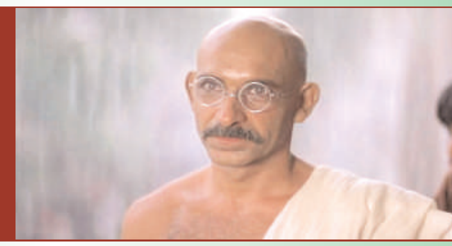

आज 15 अगस्त के दिन सभी देशवासी आजादी के रंग में रंगे हुए हैं और अंग्रेजों के कैद से मिली स्वतंत्रता के 78 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं। इस मौके पर आप बॉलीवुड की वो फिल्में देख सकते हैं, जिनमें स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष को दिखाया गया है। ये फिल्में देशभक्ति और आजादी के असल मायने महसूस कराती हैं। आइए जानते हैं उन फिल्मों के बारे में।

गांधी
राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत को आजाद दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। यह फिल्म 1982 में रिलीज हुई थी, जिसमें बेन किंग्सले ने गांधी का किरदार निभाया था। इस फिल्म में गांधी के संघर्षों और उनके अहिंसा के मार्ग पर चलकर आजादी तक पहुंचने की कहानी को बयां किया गया था।

नेताजी सुभाष चंद्र बोसः द फॉरगॉटन हीरो
श्याम बेनेगल के निर्देशन में साल 2005 में 'नेताजी सुभाष चंद्र बोसः द फॉरगॉटन हीरो' रिलीज हुई थी। इस फिल्म में नेताजी सुभाष चंद्र की भूमिका सचिन खेडेकर ने निभाई थी। फिल्म में दिखाया जाता है कि स्वतंत्रता सेनानी नेताजी ने कैसे भारत की आजादी की लड़ाई में अहम भूमिका अदा की थी।

द लीजेंड ऑफ भगत सिंह
साल 2002 में राजकुमार संतोषी द्वारा निर्देशित 'द लीजेंड ऑफ भगत सिंह' फिल्म आई थी। यह फिल्म शहीद भगत सिंह के जीवन पर आधारित थी, जिसमें दिखाया जाता है कि देश के खातिर उन्होंने अपनी जान तक कुर्बान कर दी। ये फिल्म देशवासियों के अंदर देशभक्ति की भावना का संचार करती है और भावुक भी कर देती है। फिल्म में अजय देवगन ने भगत सिंह की भूमिका निभाई थी। इसके अलावा सुशांत सिंह, डी. संतोष और अखिलेंद्र मिश्रा मुख्य भूमिका में थे।

मंगल पांडेः द राइजिंग
आमिर खान अभिनीत इस फिल्म को देखने के बाद भी दर्शकों के आंखों में आंसू आ जाते हैं। 'मंगल पांडेः द राइजिंग' फिल्म 2005 में रिलीज हुई थी, जिसमें 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम के नायक मंगल पांडे की कहानी दिखाई गई थी। आपको बताते चलें कि मंगल पांडे ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की चिंगारी जलाई थी। इस फिल्म में वीर शहीद मगंल पांडे के साहस, संघर्ष और बलिदान को दिखाया गया है। केतन मेहता के निर्देशन में यह फिल्म बनी थी।

मणिकर्णिकाः द क्वीन ऑफ झांसी
साल 2019 में कंगना रनौत अभिनीत 'मणिकर्णिकाः द क्वीन ऑफ झांसी' रिलीज हुई थी। इस फिल्म में अभिनेत्री ने वीरांगना झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की भूमिका निभाई थी। इस फिल्म में रानी लक्ष्मीबाई के साहस, रणनीति और अंग्रेजों के खिलाफ उनकी लड़ाई को दर्शाया गया है। फिल्म में दिखाया जाता है कि रानी लक्ष्मीबाई कभी अंग्रेजों के सामने नहीं झुकीं और उनके विरुद्ध एक क्रांति का आह्वान करती हैं।

With Best Wishes
DURO Supreme
DURO PIPE INDUSTRIES PVT. LTD.
25 YEARS OF EXCELLENCE
बोरिंग का सबसे भरोसेमंद पाईप
असली बोरिंग पाईप ड्यूरों पाईप
www.duropipe.com
Varanasi (up) 7617802222

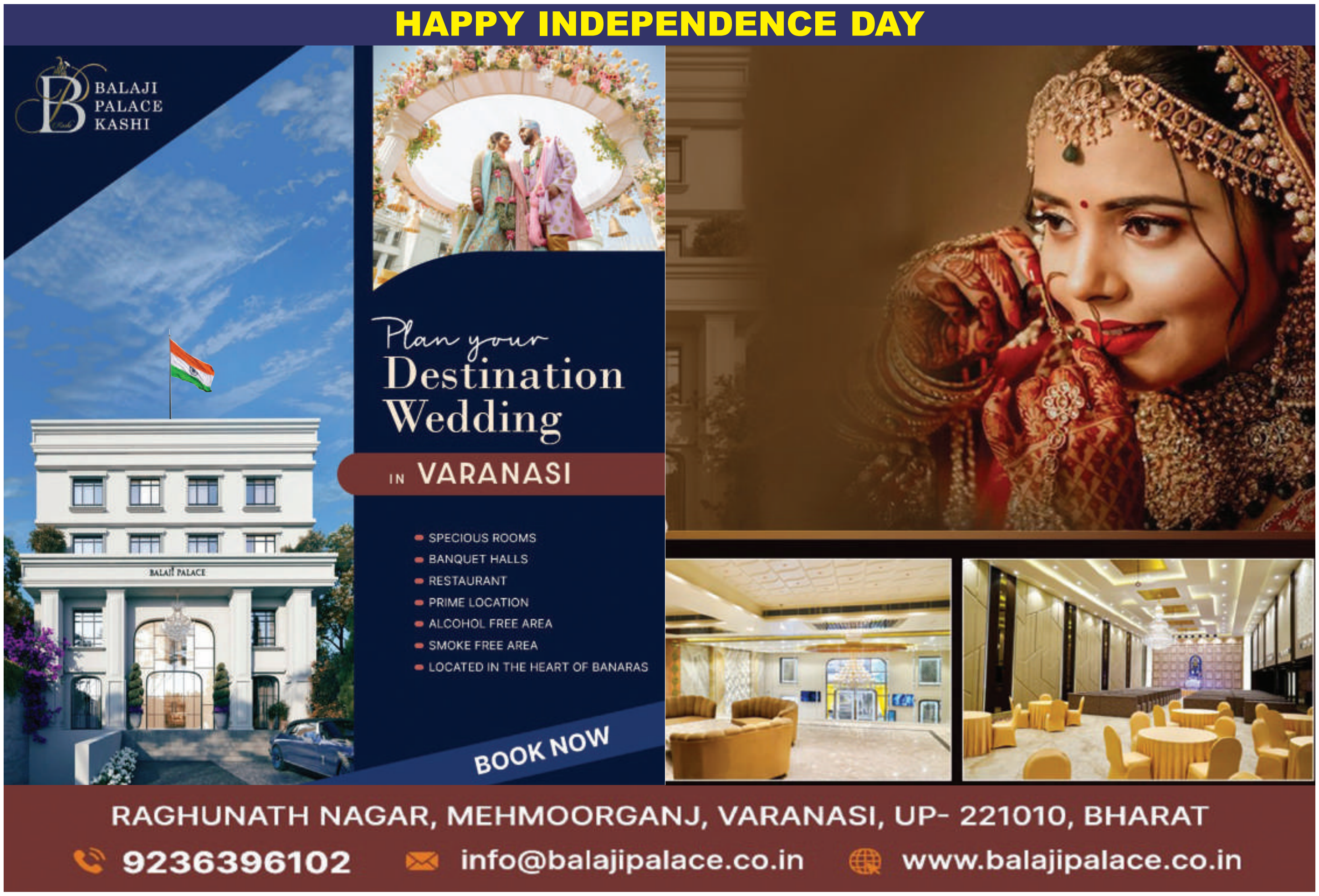

HAPPY INDEPENDENCE DAY
BALAJI PALACE KASHI
Plan your Destination Wedding
IN VARANASI
SPECIOUS ROOMS
BANQUET HALLS
RESTAURANT
PRIME LOCATION
ALCOHOL FREE AREA
SMOKE FREE AREA
LOCATED IN THE HEART OF BANARAS
BOOK NOW
RAGHUNATH NAGAR, MEHMOORGANJ, VARANASI, UP- 221010, BHARAT
9236396102
info@balajipalace.co.in
www.balajipalace.co.in

मां गायत्री देवी लोहिया बीपीएल सेवा संस्थान ट्रस्ट
BALAJI PALACE Kashi
स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
Sumangal Group
SUMANGAL ekam
Sigra, Varanasi
SUMANGAL JEWELLERS
sumangal BANARAS
Bansphatak, Varanasi
sumangal BANARAS MALL
Kasim Bazaar, Ballia
sumangal BANARAS
Park Road, Gorakhpur
BALAJI PALACE
MEHMOORGANJ